Gandhian Philosophy

M.A.-2nd Semester
Phil CC-07
Date-21/04/2020

Power Point Presentation by
Amrita Singh
Assistant Professor
Department of Philosophy
Purnea College, Purnea

Unit -3(2) Education (Lecture-2)

गांधी दर्शन में शिक्षा की अवधारणा

- गांधी जी का मत है कि राज्य का कर्तव्य है कि वह व्यक्तियों को इस प्रकार की शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था करे जो आदर्श समाज के निर्माण में सहायक हो।
- गांधी जी ने स्त्री शिक्षा का प्रबल समर्थन किया है।उनका मानना था कि पुरुष की भांति ही स्त्री को भी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है क्योंकि स्त्री और पुरुष दोनों समान हैं।

- स्त्री शिक्षा के समान ही गांधी जी ने प्रौढ़ शिक्षा पर भी बल दिया।उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जागृति का साधन माना।चरित्र,धर्म, राज्य,व्यापार,सेवा सभी के विकास के लिए प्रौढ़ शिक्षा एक प्रमुख साधन है।
- गांधी जी का मत था कि बालकों को शिक्षा उनकी रुचि,क्षमता एवम् योग्यता के अनुरूप दी जानी चाहिए।जिस कार्य या पेशे में में व्यक्ति जाना चाहता हो, उसी को केंद्र बना कर उसी के अनुसार उसके शरीर,मन एवम् आत्मा का विकास होना चाहिए।

- इसके अतिरिक्त गांधी जी का मानना था कि शिक्षा व्यवस्था इस प्रकार की होनी चाहिए जिससे कि अमीर गरीब सभी व्यक्ति शिक्षा ग्रहण कर सके।यदि शिक्षा मंहगी होगी तो सब के लिए अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था असंभव होगी।उन्होंने 7-14 वर्ष के बच्चो के लिए निःशुल्क एवम् अनिवार्य शिक्षा का भी समर्थन किया था।
- गांधी जी के अनुसार सच्ची शिक्षा वह है जो सर्वोदय के लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक हो,जिसमें सबको उन्नति के समान अवसर उपलब्ध हों,जो समता और स्वतंत्रता के सिद्धांत पर आधारित हो।

- गांधी जी के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम व्यक्तिगत एवम् सामाजिक जीवन की आवश्यकता तथा उपयोगिता पर आधारित होना चाहिए तथा उसका आधार मनोवैज्ञानिक होना चाहिए। पाठ्यक्रम में अनावश्यक रूप से अधिक पाठ्य पुस्तकें सम्मिलित न हों।
- शिक्षा के माध्यम के संबंध में गांधी जी का कहना था कि समूची शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जानी चाहिए। विषयों का ज्ञान, विचारों के आदान प्रदान का यह सबसे अच्छा साधन है।
- गांधी जी ने शिक्षा में हस्तकला, शिल्प आदि पर विशेष बल दिया।शिल्प का चुनाव स्थानीय

- आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर हो जैसे कृषि, कताई बुनाई,लकड़ी का काम,धातु का काम,चमड़े का काम आदि।इसे उन्होंने बुनियादी शिक्षा का नाम दिया।
- बुनियादी शिक्षा 'कर के सीखो(Learning by Doing) पर बल देती है।इसमें बालक स्वयं कर के सीखता है।ऐसा करने से वह सीखने के क्रम में ही उस सीख की व्यावहारिक उपयोगिता को भी समझ लेता है और यह भी समझ लेता है कि क्यों कोई कार्य एक प्रकार से तो संपन्न होता है, किन्तु अन्य प्रकार से संपन्न नहीं होता।इस प्रकार बुनियादी शिक्षा पूर्णतः व्यावहारिक शिक्षा है।

Thank You